बरवै नायकाभेद और नखसिख ।

नव्वाब अब्दुलरहीमखानखाना उपनाम रहिमन वा, रहीम कृत और अश्विनीनिवासी नरहरिकविबंशीय महापात्र बन्दीजन श्रीसेवकराम कृत ।

नैना मत रे रसना, निज गुन लीन ।
कर तू पिय झझकारे, अजगुत कौन ॥
पग तें सिर लगि बेनी, कि अहि समूख ।
कनकलता चढ़ि ससि को, पिअत मयूख ॥

डुमरावँनिवासी नकछेदी तिवारी द्वारा परिशोधित और प्रकाशित ।

यह पुस्तक काशी भारतजीवन प्रेस में मिलेगी ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९२ ई० ।

प्रथम बार १००० पुस्तक] [दाम /)